षष्ठ अध्याय

" 'रातरानी' नाटक का रंगमंचीयतएवं अभिनेयता "

६.० " 'रातरानी' नाटक का रंगमंचीयताएवं अभिनेयता "

६.१ भूमिका -

' मंच ' नाटक का दृश्य पक्ष है। मंच ही वह तत्व है, जहाँ पर नाटक अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करता है। रंगमंच के अन्तर्गत विभिन्न अनेक छोटे-छोटे तत्वों का अन्तर्भाव किया जाता है। जिसमें निर्देशक, व्यवस्थापन ध्वनि, अभिनेयता, रूप तथा दृश्य सज्जा आदि तत्वों का समावेश किया जाता है। नाटक मंच पर खेला जाता है। इसीलिए तो उसे दृश्य काव्य के अन्तर्गत रखा गया है। वर्तमान स्वरूप के रंगमंच में विभिन्न शाखाएँ समाहित है, जिसमें निर्मिती, मंच व्यवस्थापन निर्देशन सहायक निर्देशन अभिनय, पार्श्व-ध्वनि एवं संगीत संयोजन, पूर्वाभास, विज्ञापन, ध्वनि-प्रक्षेपन आदि।

मंच पर विविध साधनों का उपयोग किया जाता है। इसी बात को पुष्टि देने हेतु तथा रंगमंच के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए डॉ. चन्दूलाल दुबे कहते हैं - " अत: अब रंगमंच से तात्पर्य सिर्फ स्थूल वास्तु से नहीं, बल्कि रंगमंच से सम्बन्ध विविध साधन एवं प्रवृत्तियों से है। रंगमंच का यह सूक्ष्म पक्ष है। "[1] रंगमंच बारिकियो को काफी अत्यावश्यक और महत्वपूर्ण समझा जाता है। अत: स्पष्ट है कि रंगमंच ही नाटक का अविभाज्य अंग है। रंगमंच का पर्यायी अंग्रेजी शब्द " स्टेज " को मानते हुए "रंगमंच" के बारे में डॉ. नरनारायण राय कहते हैं " रंगमंच नाटकका आभ्यन्तरिक सत्य है और नाटक का यह सत्य जब अपने प्रदेर्शन द्वारा मूर्त रूप पाता है तो उसे हम रंगमंच कहते है। यद्यपि इस शब्द का पारंपरिक अर्थ वह स्थान या मंडप है जहाँ नाटक खेले जाते हो जिसका ठीक अंग्रेजी पर्याय स्टेज है। "[2]

---

१. डॉ. चंदूलाल दूबे — रंगमंच : सैध्दान्तिक स्वरूप, पृष्ठ-८४-८५
२. डॉ. नरनारायण राय — कोणार्क: रंग और संवेदना, पृष्ठ-६४

नाटक और रंगमंच एक-दूसरे के पूरक हैं। नाटक में रंगमंच का स्थान अनन्यसाधारण है। नाटयकृति को वास्तविक पूर्णता रंगमंच ही प्रदान करता है। किसी भी नाटयकृति का केवल साहित्यिक तत्वों को लेकर किया हुआ अध्ययन अधूरा रह जायेगा। उसको पूर्णत्व के लिए साहित्यिक तत्वों के साथ-साथ रंगमंचीय तत्वों का भी अध्ययन करना आवश्यक है। ताकि नाटयकृति को पूर्णता प्रदान हो। नाटकीय निर्देशों के अन्तर्गत नाटक के व्यावहारिक पक्ष एवं प्रस्तुतीकरण, पात्रों के विविध हावभाव, अनुभवों एवं उनके प्रवेश प्रस्थान के सम्बन्ध में उचित निर्देश रहते हैं। 'रंगमंच व्यवस्था' में मंच व्यवस्था नेपथ्य व्यवस्था, प्रकाश-व्यवस्था, संगीत व्यवस्था और ध्वनि संकेत सम्बन्धि आवश्यक के संकेत दिये जाते हैं।

६.२ हिन्दी रंगमंच -

भारतीय नाटक परंपरा अन्य साहित्यिक विधाओ की अपेक्षा बहुत प्राचीन परंपरा रही है। संस्कृत रंगमंच के मृतप्राय हो जाने के बाद भारतीय रंगपरंपरा एक प्रकार से क्षीण होकर ही रह गयी थी। लेकिन मध्यकाल में नाटक और रंगपरंपरा का स्थान मह-त्वपूर्ण रहा। उस काल में नाटक और रंगपरंपरा का स्थान मह-त्वपूर्ण रहा। उस काल में केवल साहित्यिक नाटक ही रह गये थे। रंगपरंपरा का -हास हो गया था। आगे चलकर १९ वीं शताब्दी में नवीन पध्दति से रंगकर्म और नाटय मंचीकरण के जो प्रयोग होने लगे, उसके लिए तत्कालीन अंग्रेजी शिक्षा ही कारण बनी। इस समय एक और लोकनाटयों की परंपरा चल रही थी तो दूसरी ओर पारसी थियेटर सुसंगठित होकर उभर रहा था और लगभग एक शताब्दी तक यह लोगों पर हावी रहा। इसकी मूल प्रेरणा पाश्चात्य रंगमंच था। उस काल में केवल साहित्यिक नाटकों की भरमार हो गयी। अपनी नाटय-परंपरा

के अभाव में इन नाटकों की प्रस्तुती मे अनेक कठिनाइयाँ आती रही। इस तरह नाटक और उसकी प्रस्तुती मे एकसूत्रता न आ सकी। नाटक एक तो केवल मनोरंजन का साधन समझा गया जो लोकनाटय के रूप में रहा और उसका साहित्यिक मूल्य न के बराबर था, तथा उसे निरा साहित्यिक जामा पहनाया गया और उसे रंगमंच सेअलग कर दिया गया। अत: हिन्दी नाटककारों को रंगमंच का ज्ञान परंपरा से नहीं मिला। संस्कृत नाटय परंपरा के अधूरे ज्ञान का आधार लेकर उन्हे आगे चलना पडा। तत्पश्चात नाटकीय परंपरा की नयी-नयी परिपाटियाँ चली आयी और आधुनिक परिस्थिति में नये-नये प्रयोगों का सृजन किया गया। आधुनिक हिन्दी नाटक जिस क्रम से विकसित हुआ, उसमें युगप्रवर्तक के रूप में नाटककारों का नाम अग्रणी माना जाता है। विकास की दृष्टि से नाटक को भारतेंदु युग प्रसादयुग, प्रसादोत्तर युग आदि क्योंरो मे विभाजित किया। प्रसादोत्तर युग में जिन नाटककारो ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया उसमें से डॅा. लक्ष्मीनारायण लाल का स्थान अग्रणी है। उनके एकांकिक नाटक उनकी प्रयोगशीलता के परिचायक बने।

इसप्रकार आज का रंगमंच प्रस्तुतियों और प्रयोगों के दौर में जिस तेजी के साथ गुजर रहा है वह विकास की अनेक उपलब्धियों के साथ इसे आगे भी जोडेगा। लेकिन आज भी हिन्दी रंगमंच आवश्यक जितना संगठित रूप से विकसित नहीं हुआ है। डॅा. लाल इसके सन्दर्भ में ठीक ही लिखते है कि - " हमारे यहाँ तो अभी सारे रंगतत्व बिखरे है। इसलिए अभी तो हमारी सारी शक्ति रंगमंच संगठन पर लगी है। "[१] इसप्रकार आज भी हिन्दी का रंगमंच संगठन-विहीन है, परंपरा से टूटा हुआ, लोक और जीवन से दूर तथा दर्शकहीन है। अत: हिन्दी को ऐसे रंगमंच की आवश्यकता है, " जिसमें अपनापन हो जो अपनी मिट्टी और बुनियाद से, जो अपने लोकजीवन से जुड़ा हो, वही हिन्दी का अपना रंगमंच बनने की क्षमता रखता है। "[२]

---

१. डॅा. लक्ष्मीनारायण लाल - आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच, पृष्ठ-२२
२. डॅा. सुभाष भाटिया - -लक्ष्मीनारायण लाल का रंग दर्शन, पृष्ठ-१९५

६.३ 'रातरानी' नाटक की मंचीयता :

वर्तमान परिस्थिति में नाटक की सफलता का सर्वोत्तम मानदंड रंगमंच पर उसकी अभिनेयता को ही स्वीकार किया जाता है। जो नाटक रंगमंच पर अभिनय की कसौटी पर खरा नहीं उतरता, नाट्य मर्मज्ञ और रंगकर्मी उसे नाटक तक मानने को तैयार नहीं होते। अत: नाटककार को यह आवश्यक है कि नाटक की रचना करते समय रंगमंच और अभिनय की सभी संभावनाओं का पूर्णतया ध्यान रखकर ही सृजन करें।

'रातरानी' नाटक के लेखक डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल का रंगमंच से गहरा सम्बन्ध है। आलोच्य नाटक को उन्होंने स्वयं पहली बार निर्देशित किया।

६.३.१ निर्देशन एवं मंच व्यवस्थापन :

'रातरानी' नाटक के सन्दर्भ में उसके निर्देशन के बारे में जयदेव तनेजा कहते हैं - " इस नाटकका प्रथम मंचन नाट्य केंन्द्र इलाहाबाद द्वारा २१ फरवरी, १९६२ को स्वयं लाल के निर्देशन में पैलेस थियेटर में हुआ जिसमे जयदेव और कुन्तल की प्रमुख भुमिकाएँ क्रमश: सम्पतपाल सिंह तथा हीरा चड्ढा ने अभिनीत की। मंचविन्यास आर. सी. मोहले का था।"[१] प्रस्तुत नाटक निर्देशकीय क्षमता से परिपूर्ण है। १९६२ के आस-पास दिल्ली तथा उसके आस-पास रंगमंच पर केवळ हास्य-विनोदपूर्ण नाटकों की ही सफलता मिलती थी, उसी समय 'इलाहाबाद' के मंच पर 'रातरानी' जैसे विचार प्रधान एवं गंभीर नाटक के निर्देशन और मंचन में काफी सफलता मिली है।

---

१. जयदेव तनेजा - आज के हिन्दी रंग नाटक परिवेश और परिदृश्य पृ.८७

६.३.२ अभिनय तत्व के आधार पर 'रातरानी' नाटक -

नाटककार डॉ. लक्ष्मीनारायण के विकास काल के नाटयलेखन में 'रातरानी' नाटक का स्थान आता है। इन दिनों सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, धर्मवीर भारती आदि साहित्यकारों की हिन्दी साहित्य जगत में धूम मची हुई थी। परिणाम स्वरूप नाटक जैसे मंचीय साहित्य रचना शैलियों में विशेषकर वर्णन शैली का भारी प्रभाव था। डॉ. लाल के आलोच्य नाटक में दिये हुए रंग संकेतों से इस बात का स्पष्ट पता चलता है। स्वयं लेखक ने 'रातरानी' के सृजन से पहले अनेक नाटकों का लेखन, निर्देशन, मंचन तथा अभिनय तक किया था। इसीलिए अपनी अनुभूतियों की आधार पर उन्होंने अभिनय विषयक समग्र निर्देश दिए हैं। जैसे - "गुलाबी रंग की साडी पहने है। हाथ में ताजे सफेद ग्लेडि बोलस के पुष्प का गुच्छा लिये हुए दायी ओर बढती है और फ्लॉवर-पॉट में सजाती है। फिर गाती हुई घर में तेज कदमों से चली जाती है।"[१]

" कुन्तल पुन: तेजी से आती है,......हाथ मे कैंची लिए चौकट के पास रखे क्रोटन्स पॉम तथा ऊपर चढी हुई चमेली की लता की पत्तियों को संवारती है। सहसा जयदेव अपनी मीठी सांसो से अपनी-उपस्थिति बताना चाहता है।"[२]

" कुन्तल कागज पढ रही है। भीतर से माली फूल ले आता है, उन कर्मचारियों को देने लगता है।"[3] तथा अन्य चरित्रों सम्बन्धि भी संकेत दिए है। जैसे-सुंदरम को देखकर कॉप उठना, सलज्ज माथा झुकाना और निरंजन का मूर्तिवत खडा रहना आदि सूक्ष्म सात्विक अभिनय सम्बधि दिए हुए निर्देश डॉ. लाल के अभिनय पक्ष विषयक गहरे अध्ययन के परिचायक हैं। अभिनय की दृष्टि से कुंतल, सुंदरम, माली, निरंजन आदि के चरित्र महत्वपूर्ण है।

---

१. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल — रातरानी, पृष्ठ-२२
२. वही पृष्ठ-२२ -२३
3. वही पृष्ठ-६२

६.३.३ रूप-सज्जा :

'रातरानी' नाटक में डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने चरित्रों की रूपसज्जा और वेशभूषा विषयक आवश्यक रंगसंकेत नाटककार ने दे दिये है। रूपसज्जा के सन्दर्भ में डॉ. गोविंद चातक का कथन दृष्टव्य है कि - " वेशभूषा मंच पर एक वातावरण निर्माण करती है। उसका सबसे बड़ा उद्देश्य एक ओर प्रेक्षक को पात्र की प्रतीति करानी होती है, दूसरी ओर नाटक की व्याख्या। व्याख्या से तात्पर्य यह है कि वेशभूषा के माध्यम से ही प्रेक्षक पात्र के देश, काल वातावरण, अवस्था, आर्थिक स्तर मनोविज्ञान आदि के सम्बन्ध में अपना एक बिम्ब बनता है। "[१]

'रातरानी' डॉ. लाल के अत्यन्त प्रिय नाटकों में से एक है। प्रस्तुत नाटक की रूपसज्जा संबंधी नाटककार ने सावधानता बरती है। लगभग सभी चरित्रों और महत्वपूर्ण दृश्यों को रूपसज्जा के समग्र दिए हैं। जैसे - " कुंतल गुलाबी रंग की साड़ी पहने है।...जयदेव भूरे रंग का सूट पहने हुए। आकर्षक पुरूष। "[२] " माली धोती और ऊनी बनियान, सिर पर अंगोछा बँधा है। साँवला रंग मझोला कद। सदा कुछ झुककर खड़ा रहता है। "[३]

इसप्रकार नाटककार ने प्रस्तुत नाटक में रूपसज्जा तथा वेशभूषा विषयक समग्र संकेत दिये है। उसमें नाटककार ने आर्थिक स्तर तथा दृश्य के अनुरूप परिवर्तित रूपसज्जा विषयक भी संकेत दिये हैं।

---

१. डॉ. गोविंद चातक — रंगमंच : कला और दृष्टि, पृष्ठ-५६
२. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ-२२
३. वही पृष्ठ-२७

६.३.४ दृश्य-सज्जा (दृश्यबंध)

रंगमंचीय अभिकल्पना का एक महत्वपूर्ण तत्व दृश्यबंध है। किसी भी नाटक का वस्तुविन्यास तथा अंकविभाजन दृश्यबंध की संकल्पना पर ही निर्भर करता है। नाटककार ने नाटक में नाटकीयता, संघर्ष और मंचीय सुविधा हेतु यथार्थ शैली की दृश्यसज्जा का आयोजन कर 'राताानी' नाटक को अधिक प्रभावी बनाया है। नाटककार ने दृश्यसज्जा विषयक विवरण निम्न प्रकार से दिया है।

'राताानी' नाटक के प्रथम अंक का दृश्यबंध एक कमरा है उसका वर्णन - " बडा सा कमरा जिसमें बरामदे जैसा खुलापन है। पीछे दीवार में बायीं ओर जालियों वाला एक प्रशस्त चौखटा, जिसमें इस बंगलेनुमा घर का बगीचा और फुलवारी दिख रही है। इसमेंभी परे इस देश का और नवम्बर मास का स्वच्छ नीला आकाश घिरा है। "[१] द्वितीय अंक के दूसरे दृश्य का चित्रण...."दिसम्बर का अन्तिम सप्ताह।.. सुबह के साढे आठ बज रहे हैं। शीशे की चोखट से परे बस अब धूप धीरे-धीरे आ रही है। "[२]

उपर्युक्त निर्देश से स्पष्ट होता है कि नाटककार दृश्य सज्जा के लिए यथार्थ परिणाम देना चाहता है। दृश्य सज्जा में स्थित लाल रंग का छोटा सा परदा कम्युनिज्म का संकेत साथ ही फूलवारी का हुआ परिणाम मंच पर प्लास्टिक तथा नकली लताओं तो कुछ सच्चे-झूठे गमलों का प्रयोग कर दिया जा सकता है।

---

१. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल— राताानी, पृष्ठ-२१
२, वही पृष्ठ-७४
३. वही पृष्ठ-२२

अत: स्पष्ट है कि प्रस्तुत नाटक के लिए नाटककार डॅा. लक्ष्मीनारायण लाल ने मंचीयता की दृष्टि से कुशलतापूर्वक मंचसज्जा की योजना की है।

६.३.५ प्रकाश-योजना :

प्रकाश योजना के कारण वेशभूषा, मंचीय साज-सज्जा, ध्वनि, दृश्य, प्रस्तुति के प्रयोग आदि में परिवर्तन देखने को मिलता है। आज साईक्लोरामा के माध्यम से रंगमंच पर सुर्योदय, सूर्यास्त, आँधी, तूफान आदि सभी को स्लाईड की इफेक्ट प्रोजेक्ट की सहायता से दिखाया जा सकता है। अभिनय एवं पात्रों के क्रियाकलापों को अभिव्यक्त करने के लिए पात्रों के उद्दीपत भावों के दिखाने के लिए प्रकाश व्यवस्था का प्रयोग किया जाता है।

तीन अंको में विभाजित नाटक में नाटककार ने प्रकाश-योजना का प्रयोग दृश्य और अंक परिवर्तन के लिए क्रिया है। जैसे -" नवम्बर मास का पहला सप्ताह है। सुबह के दस बज चुके हैं। बगीचे और फुलवारी में पूरी धूप फैल आयी है। खिड़की से भी धूप सा स्वच्छ सुन्दर कमरा जैसे आँखों में बस जाता है।"[१] तथा " तीनों ताश खेल रहे हैं। संध्या के पाँच बज रहे हैं।"[२]

इसप्रकार स्पष्ट है कि प्रकाश योजना का दृश्य-प्रयोजन के लिए सार्थक उपयोग किया है। प्रकाश-विषयक प्रयोग इसमें कम है। क्योंकि १९६० ई. के. आस-पास प्रकाश का मंच पर तकनीकी उपयोग इतना विकसित नहीं हो पाया था जैसा आज है।

---

१. डॅा. लक्ष्मीनारायण लाल — रातरानी, पृष्ठ— २२

२. वहीं पृष्ठ— ४८

६.३.६ पार्श्व ध्वनि एवं संगीत संयोजन :

आजकल नाटकों मे संगीत का प्रयोग किसी खास प्रभाव को बढ़ाने के लिए और नाटक को गतिशील बनाने के लिए होता है। ध्वनि और संगीत के कारण नाटक में स्थापित विषमता और विसंगति खत्म होकर नाटक में एक सुचारु स्थिति पैदा होती है।

'रातरानी' नाटक में नाटककार ने पार्श्वध्वनि तथा संगीत विषयक भी कुछ संकेत (निर्देश) दिए हैं। आलोच्य नाटक की नायिका कुंतल संगीत की ज्ञाता है और संगीत की अध्यापिका के रूप में कार्यरत है। मंच पर उसके प्रत्यक्ष गीत की भी रचना की हैं। साथ ही पृष्ठभूमि में बासुरी के स्वर, माली के भजन आदि का उल्लेख हुआ है। जैसे -....जयदेव छुडाकर हँसता हुआ चला जाता है। कुन्तल अकेली छुट जाती है। बगीचे में से उसी क्षण माली बाबा का भजन सुनाई देता है।"[1] "पृष्ठभूमि में उसी क्षण बाँसुरी का अकेला मधुर संगीत उभरता है, फिर कुन्तल के स्वर का गीत।"[2] तथा "उसी क्षण पृष्ठभूमि से प्रेस वर्कर्स के जुलूस की आवाज आने लगती है...जुलूस का कोलाहल समीप पहुँचता है। जयदेव भीतर दौडता है। जुलूस का कोलाहल बढ गया है।.....जुलूस का शोर पुरे वातावरण में छा गया है...पुलिस द्वारा लाठी चलाना आदि का भी यथार्थ परिणाम हेतु आयोजन का आग्रह किया है।"[3]

इसप्रकार "रातरानी" में नाटककार ने ध्वनि और संगीत का प्रत्यक्ष औरअप्रत्यक्ष (अर्थात पार्श्व में) रूप में प्रयोग किया है।---------

---

१. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल रातरानी पृष्ठ ७३

२. वही पृष्ठ २२

३ वही पृष्ठ ११७-११९

नाटककार पार्श्व ध्वनियों द्वारा यथार्थ का वातावरण उजागर करने सम्बन्धि आग्रही दिखाई देता है।

६.३.७ रंगमंचीय प्रस्तुति और दर्शकीय संवेदना -

नाटक के रंगमंचीय आयामों मे रंगमंचीय प्रस्तुति का अपना अलग महत्त्व है। किसी भी नाटक का प्रस्तुतिकरण नाटककार द्वारा नाटक मे दिये गये रंग संकेतों के आधार पर तथा किसी कुशल निर्देशक के निर्देशनपर किया जाता है। रंगमंचीय प्रस्तुति में नाटककार और निर्देशक के साथ-साथ अन्य रंगकर्मियों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है।

स्पष्ट है कि प्रस्तुत नाटक दर्शकीय संवेदना को झकझोर देनेवाला है, साथ ही दर्शक को प्रभावित करनेवाला एक सफल नाटक है।

निष्कर्ष :

'रातरानी' रंगमंच और अभिनय की दृष्टि से एक सफल नाट्य रचना है। प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने अभिनय सम्बन्धि पर्याप्त रंग-निर्देश दिये हैं। कायिक-वाचिक अभिनय के साथ-साथ सात्विक अभिनय के भी अनेक अवसर प्रदान किये हैं। उन्होंने पात्रों के भावों और मन:स्थितियों को गहराई से व्यंगित किया है। रूपसज्जा तथा दृश्यसज्जा विषयक समग्र रंग-संकेत नाटककार ने दिये हैं। प्रकाश योजना का प्रयोग अंक तथा दृश्य विभाजन के साथ वातावरण निर्मिती के लिए भी किया है। पार्श्वध्वनि और संगीत का सफल प्रयोग किया है। आलोच्य नाटक दर्शकीय संवेदना को झकझोर देनेवाला तथा दर्शक को प्रभावित करनेवाला है। 'रातरानी' का प्रथम प्रयोग नाट्य केंद्र इलाहाबाद द्वारा २१ फरवरी, १९६२ को स्वयं डॉ. लाल के निर्देशन में पैलेस थियेटर में हुआ। इसप्रकार यह नाटक अभिनय और मंचीयता की दृष्टि से अत्यंत उत्कृष्ट और सफल नाट्य रचना है।